that there should be no discussion at all on that? What is the position, Sir?

MR. CHAIRMAN: We are discussing it on the Railway Budget.

DR. R. B. GOUR: On the Railway Budget? Well, Sir, we have not been supplied with a copy of the Commission's Report, nor with a copy of the Resolution.

MR. CHAIRMAN: Well, we will see about it.

MOTION OF THANKS ON PRESIDENT'S ADDRESS

MR. CHAIRMAN: Now, we take up the discussion on the President's Address.

पंडित अलगू राय शास्त्री (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, मैं यह प्रस्ताव रखता हूं कि राष्ट्रपति के प्रति निम्नलिखित रूप में कृतज्ञता प्रज्ञापित की जाय :

> "१३ मई, १९५७ को एक साथ समवेत संसद् के दोनों सदनों के सम्मुख राष्ट्रपति ने जो अभिभाषण दिया है, उसके लिये राज्य सभा के सदस्य, जो सभा के वर्तमान सत्र में उपस्थित हैं, राष्ट्रपति के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।"

राष्ट्रपति के प्रति ऐसे अभिभाषण के लिये कृतज्ञता प्रकाशित करने की सामान्य परिपाटी है । न इसमें कोई नवीनता है, न कोई विचित्रता । परन्तु इस बार राष्ट्रपति को भारत को जनता ने, जनता के प्रतिनिधियों ने जिस उत्साह से, जिस प्रेम से दोबारा चुना है, उसके राष्ट्रपति वास्तव में पात्र हैं । वे उस गांधी-युग के प्रतीक हैं, जो स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ चुका है । देश के साधारण लोक-सेवा-कार्यों में उनकी निष्ठा रही है । जब राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद जी की मूर्ति बिहार के भूचाल के समय ग्राम-ग्राम में जन-साधारण की सेवा करते हुये मेरे समक्ष आती है तो मैं उस महापुरुष के चरणों में नतमस्तक होता हूं । जो भी व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से उनके सम्पर्क में आयेगा, वह यह देखेगा कि उनमें पृथ्वी के समान क्षमा और समुद्र के समान गम्भीरता है । वे महापुरुष "क्षमया पृथिवी समः, समुद्र इव गांभीर्य" हैं । जो रूप हमको राम के चरित्र में मिलता है वह इस श्याम मूर्ति को निरखने में मिलता है । वे सचमुच उन्हीं गुणों का सम्मिश्रण हैं । ऐसे महापुरुष को राष्ट्र ने अपना प्रतीक बनाया और ऐसा करके अपना गौरव ही बढ़ाया है ।

राष्ट्रपति के अभिभाषण को हम ध्यान से पढ़ें तो ३० वाक्य समूहों के छोटे से अभिभाषण में उन्होंने उन सब महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विशद् प्रकाश डाला है और हमारा नेतृत्व किया है जो प्रश्न हमारे सामने और राष्ट्र के सामने, बल्कि विश्व के सामने समस्या के रूप में है और उनके समाधान की अपेक्षा है । किस तरह उनका हल निकले इसकी पुकार है मानवता की ओर से, इस देश की मानवता की ओर से और विश्व की मानवता की ओर से । क्या हमारे देश की समस्याओं का और क्या विदेशों का, सभी प्रश्नों पर गम्भीरता के साथ थोड़े थोड़े शब्दों में हमारा ध्यान आकृष्ट किया गया है । उन समस्याओं को सामने रख कर उनको सुलझाने की ओर इतिदिक इशारा किया गया है कि इस दिशा में जाने से काम चलेगा । उसमें कोई डिक्री का रूप नहीं है, कोई अध्यादेश का रूप नहीं है, कोई उपदेश का रूप नहीं, सिखावन का रूप है, चेतावनी का रूप है, मंत्रणा का रूप है । हमारा जो यह प्रजातन्त्र का ढांचा है, उसमें जो मूर्धन्य स्थान में बैठा हुआ महान् व्यक्ति है, वह ऐसा ही कर सकता है । उसका रूप डिक्टेटर का रूप नहीं है । तो इस अभिभाषण

[पं० अलगू राय शास्त्री]
में हमको सब चीज़े मिलती हैं और सब प्रकार की समस्यायें सामने आती हैं और उनको सुलझाने का हमको मार्ग बताया गया है ।

सबसे पहले राष्ट्रपति ने जनता के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की । मै आपकी आज्ञा से, इस सदन की ओर से उस कृतज्ञता प्रकाशन के लिये भी उनके प्रति आभार प्रकट करता हूं कि उन्होंने विनयशीलता का एक पाठ हमको पढ़ाया है ।

इसके बाद राष्ट्रपति ने अपने भाषण में नये संसद् के निर्वाचन पर हर्ष प्रकट किया है । हमारा तो यह सदन नया निर्वाचित नहीं है, यह तो कभी भंग होने वाला सदन नहीं है, शाश्वत जीवी सदन है, कभी कोई यहां आता है कभी कोई जाता है, सदस्य बदलते रहते हैं । "एक जाता है तो आता है अदम से दूसरा । उसकी महफिल में कभी खाली मकां होता नहीं ।" नया निर्वाचन तो लोक-सभा का हुआ और उस लोकसभा के निर्वाचन में जो सबसे बड़ी महत्वपूर्ण बात मुझको दिखाई पड़ती है वह जनता का शासनारूढ़ दल के प्रति उद्‌गार और भावना है । जनता की श्रद्धा, उसका प्रेम, उसका विश्वास सरकार के प्रति अटूट रूप से कायम है, यह दिखायी पड़ता है । उसमें कांग्रेस के सदस्यों की, जिस दल से मेरा भी सम्बन्ध है संख्या बढ़ी है, घटी नहीं है । किन्तु उसके साथ जो नयी बात मुझे दिखायी पड़ी इस निर्वाचन में. वह यह कि जनता में जागरूकता आई है । हमने यह देखा कि सागर तट पर स्थित ट्रावनकोर-कोचीन में कांग्रेस की सरकार नहीं बनी, दूसरी सरकार बनी । हमने देखा कि उड़ीसा में एक अजीब किस्म का भूचाल आया । हमने देखा, अपने ही उत्तर प्रदेश में, कि जहां विरोधी दल में ४४ सदस्य थे वहां १४४ सदस्य आज विधान-सभा में आ गये हैं । इन चीजों को देख कर मेरे मन को धक्का नहीं लगा, मुझको आश्चर्य नहीं हुआ । मुझे इस माने में प्रसन्नता हुई कि जनता जागरूक हुई है, जनता अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिये स्वयं विचार में निमग्न हो गई है, वह अपनी भलाई-बुराई को देखती है । एक समय था जब भारत की जनता एक प्रकार से जड़ता में पड़ी हुई थी— "कोई नृप होय हमें का हानी, चेरि छांड़ि नहिं होइये रानी ।" यह हम समझा करते थे । आम लोग समझते थे कि राजा आते है जाते हैं, लेकिन अब वही जनता राजाओं को बदलती है, शासकों को बदलती है । साधारण आदमियों ने भी भारी बहुमत से मंत्रियों को हरा कर चुनाव जीता है, जो सत्ताधारी लोग थे उनको भारी बहुमत से उन लोगों ने हराया जो देखने में नगण्य प्रतीत होते थे । ये सब चीज़ें जनता की जागरूकता की प्रतीक हैं और अगर जनता जागरूक है तो राष्ट्र उन्नत होगा ।

"यो जागार तमृचः कामयन्ते
यो जागार तमुयं सामयन्ति
यो जागार तमुयं सोमआह
तवाहमस्मि सख्ये न्योका ।"

ऋगवेद् के इस मंत्र में कहा गया है कि जो जागरूक है, जागता है उसके आगे ऋचायें कामना करती हैं, साम उसका संगीत गाते है, चन्द्रमा उसे कहता है कि मैं तुम्हारी मित्रता के लिये लालायित हूं । तो भारत के जागते ही मूक जनता खड़ी हो गयी है अपने पावों पर और अपने भाग्य का आप निर्णय कर रही है, किसी तीर, तलवार, भाले, बंदूक या तोप के ज़ोर से नहीं, बल्कि एक मामूली वोट देने की पर्ची से निर्णय कर रही है । मामूली से अकिंचन लोग जो सड़कों पर घूमते थे, वे विधान भवनों में और यहां आ गये हैं, यह कोई साधारण बात नहीं है । इस प्रकार से नयी भावना, नया रक्त, नयी चेतना, नयी जागरूकता इस देश में आई है और प्रजातंत्र प्रणाली के लिये इससे बड़ा वरदान कोई नहीं हो सकता । इस दृष्टि से जो हमारे दल के आदमी हारे हैं, जो अपने सगे भाई हारे

हैं उसका मुझे खेद नहीं क्योंकि उसने हमें इस बात को प्रमाणित किया है कि :

"यद्धि उपनिषदा विद्यया करोति
तद्धि वीर्यवत्तरम् भवति ।"

अर्थात् जो जान बूझ कर कार्य किया जाता है, जो डेलीवरेट ऐक्शन है, उसी में बल है, उसी में शक्ति है, उसी से राष्ट्र प्रगति करेगा । नये निर्वाचन को देख कर मुझे यह संतोष मिलता है । राष्ट्रपति के अभिभाषण में भी उसका उल्लेख आने के कारण प्रसंगवश मैं ने भी इस बात की चर्चा यहां कर दी । इससे एक बात प्रमाणित होती है कि अगर बैलट बाक्स टैम्पर होते तो इस प्रकार के नतीजे हमारे सामने नहीं आते जो आज हम देख रहे हैं । अगर सरकारी कर्मचारियों में दासता की मनोवृत्ति होती, तो वे बेईमानी करते । मुझे हाल में मालूम हुआ है कि लखनऊ में सेक्रेटेरियट के चपरासियों ने कांग्रेस के विरुद्ध वोट दिया और निर्भीक हो कर उन लोगों ने अपने वोट का इस्तेमाल किया ।

श्री किशन चन्द (आन्ध्र प्रदेश) : क्या आपने बैलट बाक्स तोड़ कर देखा था ?

पंडित अलगू राय शास्त्री : मैं ने बैलेट बाक्स तो नहीं देखा मगर वे लोग निर्भय हो कर गीत गाते हैं और ज़िक्र करते हैं कि हमने कांग्रेस के विरुद्ध वोट दिया । चुनाव के बाद वहां का जो नतीजा मालूम हुआ, उसको देख कर कोई भी प्रतिभावान आदमी यह अनुमान लगा सकता है कि इन लोगों ने किस ओर वोट दिया होगा ।

मंत्र : यश्च छन्दसा ऋषभो विश्व-
रूपः समे इन्द्रो मेधया स्पृणोतु

जो आदमी सरस्वती के ऊपर विश्वास रखता है और इन्द्र जिसकी मेधा को स्पर्श करता है, वह इस चीज़ को समझ सकता है और वह इस अनुभूति को कह सकता है । मैं कहता हूं कि आज जनता जागरूक हुई है, भय से ऊपर है, वह इस चीज़ की परवाह नहीं करती कि कौन क्या है । यह राष्ट्र के बनने का एक सुन्दर लक्षण है ।

डा० आर० बी० गौड़ (आन्ध्र प्रदेश): यह आप तीसरी आंख से देख रहे हैं, गालिबन ।

पंडित अलगू राय शास्त्री : मैं तीसरी आंख से नहीं देख रहा हूं । मैं ने अभी तीसरी आंख नहीं खोली है । पहले तो जो मानव नेत्र हैं उसी से ज्ञात देने की चेष्टा कर रहा हूं । तो मैं इस बात का ज़िक्र कर रहा था कि इस चुनाव से देश की जनता में आशा का संचार हुआ है और वह अधिक जागरूक हो गयी है ।

राष्ट्रपति ने अपने अभिभाषण के तीसरे वाक्य समूह में हमारे देश की जो बड़ी और प्रमुख समस्या है उसका उल्लेख किया है । देश की आज सब से बड़ी आवश्यकता यह है कि हम अपनी दूसरी पंचवर्षीय योजना को किसी न किसी प्रकार पूर्ण करें । द्वितीय पंचवर्षीय योजना को सफल बनाना राष्ट्र का कर्तव्य है । जो लोग जनता के प्रतिनिधि बन कर यहां पर आये हैं उनके सामने आज एक आवाहन है कि देश का नव-निर्माण किस तरह से पूरा किया जा सकता है । उस नव-नर्माण के लिये प्रथम पंचवर्षीय योजना की कल्पना की गई जो कि पूरी हो चुकी है और अब द्वितीय पंचवर्षीय योजना चालू है जिसे हम सब लोगों को पूर्ण करना है । जो हमारे भाई उस तरफ बैठे हैं उन्होंने पंचवर्षीय योजना का नाम तो सुना होगा क्योंकि रूस ने भी विशेष रूप से इन योजनाओं को कार्यान्वित किया और अपने गिरे हुये स्तर को ऊंचा उठाया । हमारी योजना भी इस बात की आकांक्षा करती है कि हम भी आत्म संयम से काम करें, नियंत्रण से काम लें और ऐसी कोई उच्छृंखलता न करें जिससे राष्ट्र के नव-निर्माण में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न हो । अगर हमें योजना के अनुसार कार्य करना है, तो हमें वैसा ही करना होगा जिस प्रकार रूस के नागरिकों ने अपनी

[पं० अलगू राय शास्त्री]

योजनाओं को पूरा किया है । हमें भी यहां संयत ढंग से, संयमपूर्वक और एक दूसरे के साथ सहयोग करके देश के नव-निर्माण के काम को आगे बढ़ाना होगा । पिछली पंचवर्षीय योजना का जो रूप हमारे सामने आया है, मैं समझता हूं उसकी प्रशंसा सब जगह से, देश के कोने कोने से कि देश ने कितनी प्रगति की है आई है । प्रथम पंचवर्षीय योजना की सफलता के रूप में जो आंकड़े प्रकाशित हुये हैं, वह प्रत्येक पाठक को मिल चुके होंगे । उन आंकड़ों को देख कर हम गौरव के साथ कह सकते हैं कि देश पराधीनता की बेड़ी से मुक्त होने के बाद स्वल्प काल में , पिछले १० वर्षों में, जितनी उन्नति कर चुका है और आगे अग्रसर हो रहा है वह आश्चर्यजनक है । हमारे देश में जो विदेशी लोग आते हैं वे यहां की प्रगति को देख कर चकित हो जाते हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं । जब पिछली बार ख्रुश्चेव और रूस के प्रधान मंत्री बुलगानिन हमारे देश की यात्रा के लिये आये थे तो उन्होंने सारे देश को एक कारखाने के रूप में पाया । जो लोग थोड़ी सी भी सहानुभूति रखते होंगे उन्हें यह पता चल जायेगा कि इस स्वल्प काल में देश कहां से कहां चला गया है । आज हमारे देश में कलकारखाने बनाये जा रहे हैं, हम अपने यहां समुद्री जहाज और हवाई जहाज बनाने के मार्ग में अग्रसर हो रहे हैं, हम इंजन ढाल रहे हैं, स्टील प्लांट लगा रहे हैं, और कई तरह के छोटे-छोटे उद्योग धंधे शुरू किये गये हैं । हम कृषि उद्योग की ओर भी अग्रसर हो रहे हैं, यह चीजें ऐसी हैं जो कि दीवार पर लिखी हुई हैं और कोई अंधे से अंधा आदमी भी देख सकता है कि सदियों से पड़ा हुआ गुलाम देश जो एक खंडहर था आज किस तरह से प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है । वह देश जिसमें उसके विदेशी शासक टूटी हुई चारपाई और फूटी हुई थाली छोड़ गये थे आज उन्नति के शिखर की ओर धीरे-धीरे बढ़ रहा है । वह उन्नति की शिखर हिमालय की चोटी के समान है और उसमें आसानी से उड़ कर पहुंचना मुश्किल है । प्रगतिशीलता के लिये शनैः शनैः कदम आगे बढ़ते हैं । इसका एक कारण यह भी है कि हमने अपनी रीति-नीति, राजनीति ऐसी स्वीकार की है कि जो प्रजातंत्रीय प्रणाली पर आधारित है । अगर हम तानाशाही या डिक्टेटरशिप अख्तियार करते तो यहां भी प्रजातंत्र एक डिक्टेटरशिप के रूप में परिणत हो जाता । आज दिल्ली में किसी का कोई मकान नहीं होता, दिल्ली में जितने मकान होते वे सब सरकार के नियंत्रण में होते, दिल्ली सोवियत के होते । जिस प्रकार मास्को में जितने मकान हैं, वे सब मास्को सोवियत के हैं, उसी प्रकार यहां पर भी सब मकान सरकार की सम्पत्ति हो जाते । किसी की कोई व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं होती । जिस प्रकार से हमारी सदन की कार्यवाही चल रही है, वह भी उस प्रकार से नहीं चलती । सिर्फ एक-दो दिन के लिये सदन को बुलाया जाता और डिक्रीज़ जारी कर दी जाती । जिस प्रकार प्रत्येक सदन को इस समय यहां पर सरकार की नीतियों की आलोचना करने का अवसर है, उस तरह का कोई अवसर उसको डिक्टेटरशिप में न मिलता । आज हम जनता को अपने साथ लेकर, उसके हृदय को जीत कर आगे बढ़ने की चेष्टा करते हैं । इस चीज़ को देखते हुये देश की प्रगति को देखा जाय तो मालूम होगा कि देश ने कितनी प्रगति की है । मगर मैं आपके सामने पिछली पंचवर्षीय योजना के कुछ आंकड़े पढ़ दूं तो कोई अनुचित नहीं होगा ।

हमारी देश की समस्यायें जटिल रही हैं—देश का विभाजन—काश्मीर के प्रश्न की जटिलता, बाढ़, ओला-पानी, सूखा, भीतरी अशान्ति, पाकिस्तान से तनाव तथा पूर्वी पाकिस्तान से हिन्दुओं का निष्कासन, इन सब बातों के होते हुये भी हमारी योजना आगे ही बढ़ती गई । हम उदाहरण के लिये कुछ आंकड़ों को सामने रख लें, तो आनुक्रमिक प्रगति का स्वरूप हमें स्पष्ट ज्ञात हो

जायेगा और यह मालूम हो जायेगा कि किस तरह देश ने पिछले १० वर्षों में प्रगति की है, कुछ खोया नहीं है ।

प्रथम योजना की सफलता के फलस्वरूप राष्ट्रीय आय में १८ प्रतिशत की वृद्धि हुई है । १९५०–५१ में जो आय ९.११० करोड़ थी वह १९५५–५६ में १०,८०० करोड़ हो गयी । प्रति व्यक्ति आय की दर में ११ प्रतिशत की वृद्धि हुई और प्रति व्यक्ति आय का जो भाग उपभोग में लाता है उसमें ९ प्रतिशत करोड़ की बढ़ोतरी हुई है ।

अन्न के उत्पादन में २० प्रतिशत, कपास के उत्पादन में ४५ प्रतिशत तथा तिलहन में ८ प्रतिशत बढ़ा है । सिंचाई की सुविधा के कारण ६० लाख एकड़ नयी भूमि सींची गई और छोटी सिंचाई योजना के फलस्वरूप १ करोड़ एकड़ भूमि को लाभ पहुंचा है ।

विकास के इन कार्यों पर ३,१०० करोड़ व्यय हो चुका है । परन्तु सन्तोष करने की बात है कि इस भारी व्यय के होते हुये भी मुद्रास्फीति के हम शिकार नहीं हुये हैं । यह काम राष्ट्रीय आय का ६ प्रतिशत है जो कम नहीं कहा जा सकता । अगर हम इसी प्रकार से चलते रहें तो हम सन् १९७१–७२ में जो अनुमान किये जाते हैं उससे राष्ट्रीय आय दूनी हो जायेगी । और सन १९७७–७८ तक व्यक्तिगत आय भी दूनी हो जायेगी । इस तरीके से हम प्रगति की ओर बढ़ते जा रहे हैं ।

प्रथम पंचवर्षीय योजना में हरिजनों और पिछड़ी जातियों के उत्थान पर ३ करोड़ रुपया व्यय हुआ था और दूसरी योजना में ९१ करोड़ रुपये का अनुमान लगाया गया है । गृह निर्माण पर ३८.५ करोड पहली योजना में खर्च हुआ था । अब १२०.० करोड़ दूसरी योजना में आंका जाता है । परिवार नियोजन पर ५ करोड़ का व्यय होगा । इससे दो हजार गांवों में तथा तीन सौ शहरों में कुल परिवार नियोजन केन्द्र खुल सकेंगे । जनसंख्या निरोध के लिये यह एक बड़ा सक्रिय कदम होगा ।

समाज-कल्याण पर २९ करोड़ रुपये का व्यय होना है । आज २९१ समाज-कल्याण योजनायें हैं । दूसरी योजना के अन्त तक इनकी संख्या १,३२० हो जायेगी ।

विस्थापितों की सहायता के लिये पहली योजना में २३ लाख पश्चिमी पाकिस्तान के विस्थापितों की व्यवस्था की गयी थी । गांवों में खेतीबाड़ी में उन में से १२ लाख लोग लगाये गये । शहरों के घरों में उनको जगह दी गई——१० लाख निष्क्रान्त घरों में उनको जगह दी गई और २ लाख नये घर बना कर । पूर्वी पाकिस्तान के विस्थापितों की समस्या तो पांचाली के चीर की तरह बढ़ती ही जाती है. हल होती दिखाई नहीं देती है ।

अन्य क्षेत्रों में जैसे शिक्षा, वैज्ञानिक गवेषणा और खोज की दिशा में भारी विस्तार हुआ है ।

बेकारी की समस्या सुलझानी है, लेकिन बहुत कुछ सुलझाने का प्रयत्न हो रहा है ।

इस तरीके से अगर हम देखें, तो जो पिछली योजना कार्यान्वित हुई है, उसके फलस्वरूप देश ने यह तरक्की की है और अगर यह तरक्की इस बीच में की है तो आवश्यक है कि दूसरी योजना हम सफल बनावें । हमारे सामने कुछ अड़चनें आई है । स्वेज कैनाल पर झगड़ा हुआ, जिससे हम बड़ी मशीनरी वगैरह नहीं मंगा सके, टेम्पोरेरी सेटअप बिगड़ गया, फौरन एक्सचेंज का मामला गड़बड़ा गया । इसको सब लोग स्वीकार करते हैं और श्री वी० टी० कृष्णमाचारी ने भी यह स्वीकार किया है कि जो फूड प्रोडक्शन दूसरी पंचवर्षीय योजना में होना चाहिये उसमें कमी हुई है । पंडित

[पं० अलगू राय शास्त्री]

गोविन्द बल्लभ पन्त ने भी यह बात स्वीकार की है . . .

श्री किशन चन्द : बड़ी-बड़ी मशीनरी न आने की वजह से क्यों कमी हुई ?

पंडित अलगू राय शास्त्री : बहुत से कारण हुये हैं ।

डा० आर० बी० गौड : इसी लिये बीड़ी पर टैक्स लगाया है ।

पंडित अलगू राय शास्त्री : अभी मैं उन बातों पर आ रहा हूं । आप जरा सुन लें । ये सारी बातें हुई, इसलिये कमी हुई । इसके अतिरिक्त एक बात हम और आप भूल जाते हैं । यह मानना पड़ेगा कि स्वराज्य के आने के बाद हमारे नगरों का नया निर्माण हो रहा है । गांवों के लोग नगरों की ओर आते हैं । खाने वाले मुंह बढ़ते जाते हैं और कमाने वाले हाथ कम होते जाते हैं । जब कंट्रोल्ड इकोनामी चली, जब परमिट से गेहूं और चीनी मिलने लगी, तो गांवों तक में लोगों को मोटा अनाज खाने का अवसर नहीं मिला, चाहे बाहर से मंगा कर के गेहूं दिया गया हो, चाहे पैदावार बढ़ा करके दिया गया हो । इस साल उत्तर प्रदेश में दस लाख टन से ज्यादा चीनी पैदा हुई है । पिछले पांच वर्षों में चीनी की पैदावार दुगुनी हो गयी है । यह कैश क्राप के रूप में है इससे लोगों को पैसा मिलता है । इसलिये लोग ज्यादा गन्ना बोते हैं, बाजरा नहीं बोते हैं, मोटा अनाज नहीं बोते हैं । इसके अतिरिक्त लोगों की खाने की आदत खराब हो गई है । हमने परमिट से चीनी सब को खिलाई । जो गुड़ खाते थे उनको चीनी दी गई है और जो मोटा अनाज खाते थे, उनको गेहूं और चावल दिया गया है । चाहे हम बाहर से मंगायें लेकिन उनको खिलाते हैं । फिर एक चीज और देखनी चाहिये कि बराबर बाढ़, बूड़ा, सूखा और भुखमरी का सामना इस देश ने किया । जब हम आलोचना करते हैं तो यह भूल जाते हैं कि जब यहां अंग्रेजी हुकूमत थी तो लार्ड वैवेल की फौजों ने बंगाल में भुखमरी से मरे हुये ४० लाख आदमियों की लाशें हटाईं । उस समय हम लोग जेलों में पड़े हुये थे । क्या ऐसी भुखमरी इस हुकूमत के समय में भी आई है ? उसी तरह के बाढ़, बूड़ा आदि के संकट इस देश पर आये हैं और ऐसे आकस्मिक संकटों के होते हुये, ऐसे प्राकृतिक संकटों के होते हुये सरकार ने सबको खिलाने का प्रबन्ध किया है, चाहे उधार ले कर किया हो, चाहे उत्पादन बढ़ा करके किया हो, जिसका वर्णन मैंने पहले दिया है । चाहे बाहर से मंगा कर हो, चाहे उधार लेकर हो, जिस प्रकार एक परिवार का बड़ा आदमी अपने परिवार के पालन के लिये चाहे कर्ज से हो, चाहे मांग कर हो अनाज का प्रबन्ध करता है, उसी प्रकार हम अनाज ले आते हैं और सबको खिलाते हैं । मुझे लज्जा आती है कि उधार ले आते हैं, मगर ले इसलिये आते हैं कि खाने वाले मुंह बाये खड़े हैं और आवश्यकता यह है कि उसमें कुछ डाला जाय । तो यह काम चाहे जिस तरह किया गया हो, किया गया है और यह काम स्तुत्य है । अगर आज लोगों को भुखमरी दिखाई पड़ती है तो वह उस तरह से है नहीं । कोई आदमी दुबला नजर नहीं आता । लोग खाते हैं, अच्छा खाते हैं, काफी खाते हैं, काफी खाने लगे हैं । यह पेट इतना मोटा है कि कोई चाहे जितना खाता जाये, वह भरता ही नहीं है । जितनी चीज एक आदमी अपने जीवन में खा लेता है, और पचा कर मर जाता है, उतनी सामग्री एक बड़े से बड़े गड्ढे को भर सकती है :

"इयमुदरदरीदुरन्तपूरा"

क्षुधा के ऊपर कोई मापदंड नहीं लगा सकता है । इसके साथ-साथ जो कल एक वक्त खाते थे, आज वे दो वक्त खाते हैं और जो कल मोटा अन्न खाते थे, वे आज गेहूं और चीनी खाते हैं, और ज्यों-ज्यों आबादी बढ़ती

जाती है, तमाम चीजों की कमी दिखाई पड़ती है। हमको वस्तुस्थिति को समझना चाहिये। जब हम ऐसे सम्मानित सदन में ऐसी बात करते हैं कि भुखमरी है, खाना नहीं मिलता है, परेशानी है तो हम इससे होर्डिंग की ओर लोगों का ध्यान दिलाते हैं क्योंकि बनिया समझता है कि मुसीबत आने वाली है। इससे हम एक आतंक फैलाते हैं एक भय फैलाते हैं। अगर लड़ाई के जमाने में ऐसा आतंक और भय फैला दिया जाय, तो लोग बोरों में अनाज भर कर के भूसे में फेंक देंगे। आज सरकार इतनी सतर्क है कि वह किसी को भूखा मरने देने के लिये तैयार नहीं है। उत्तर प्रदेश की सरकार ने पूर्वी जिलों के लिये १५ हजार टन अन्न की मांग की और केन्द्र सरकार वह पूरा अनाज देना चाहती है और दे रही है। श्रीमन्, एक ऐसे क्षेत्र से मैं आता हूं जहां पर बाढ़, बूड़ा और सूखा पिछले पांच वर्षों से पैर तोड़ के बैठा हुआ है, मगर सस्ते गल्ले की दुकानों पर जो मोटा मोटा गेहूं मिल रहा है वह बचपन में मैंने कभी देखा ही नहीं था। वह वह क्षेत्र है जहां लोग, गरीब लैंडलैस लेबरर्स गोबर में से अनाज निकाल कर के खाते हैं। उस क्षेत्र में सस्ता गेहूं मोटे दाने का सरकारी दुकानों पर मैंने अपनी आंखों से देखा और उसको देख कर के निहाल हो गया। मैं जिस ऊसर क्षेत्र से आता हूं उसमें बहती हुई गंगा को, जो नल कूपों से चल रही है, अपनी आंखों से देखा है। दोहरीघाट की नहर एक दर्शनीय वस्तु है और उसको देखने के लिये यहां के सम्मानित सदस्य जायेंगे तो देख कर आश्चर्य चकित होंगे कि किस तरह पानी की इतनी बड़ी धार इतने ऊंचे से बहा दी गई है और वह सारे प्रदेश को सिंचित कर रही है। यह वस्तुस्थिति है, ये विकास हुये हैं, इस तरह से देश में उन्नति हुई है। मगर हमारी आवश्यकतायें बढ़ी हैं और हमारे देश के लोग अपने पैरों पर खड़े हो रहे हैं। अब हर आदमी कृष्ण की तरह यशोदा से कहता है :

"दूध, दही, घृत माखन, मेवा,
जो मांगो सो देरी।"

मैं जो मांगूं, वह मुझे दो। अब हर आदमी दूध, दही, घी और मक्खन मांगता है। उसको मांगने का अधिकार है। लेकिन इसके लिये राष्ट्र को सम्पन्न होना चाहिये और राष्ट्र सम्पन्न होगा, इसमें शक नहीं है कि इस ओर हम प्रगतिशील हैं, लेकिन अभी बहुत कुछ करना है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में हमको विस्थापितों पर और अधिक व्यय करना है, पिछड़े हुये वर्गों के लिये अधिक व्यय करना है, घरों का निर्माण करना है, लोगों को आवास देना है, लोगों को अन्न देना है, लोगों को सम्पन्नता, स्वास्थ्य और शिक्षा देनी है और जब ये सब काम करने हों तो कृष्णमाचारी जी ने अपने इस वाक्य में ठीक ही कहा था कि अगर वे टैक्स लगा रहे हैं तो उसका अर्थ केवल यह है कि पंचवर्षीय योजना को कार्यान्वित करना है। मैं समझता हूं कि जो टैक्स लग रहे हैं, जो हम अपने ऊपर भार ले रहे हैं यह स्वेच्छा से लिया हुआ भार है और होना भी चाहिये। जब हम सोशलिस्टिक पैटर्न की आवाज़ लगाते हैं तो फिर यदि आज पूरी व्यक्तिगत सम्पत्ति पर सरकार अपना अधिकार नहीं जमाती है, तो धीरे धीरे उसको ऐसा करना ही होगा। जब सरकार टैक्स लगाती है तो उसका प्रभाव सबके ऊपर पड़ता है। चाहे समुद्र हो, चाहे नदी हो, चाहे तालाब हो और चाहे दूब की नन्ही हरी पत्ती सब का पानी सूखता है। सूर्य सबका पानी इसलिये सुखाता है कि ताकि फिर वर्षा करके सबको हरा-भरा कर दे। सरकार जो हमसे त्याग चाहती है, राष्ट्रपति जी जो हमसे त्याग चाहते हैं, जिस बलिदान की मांग करते हैं उस मांग के पीछे यही एक भावना है कि यह देश हरा-भरा हो। जनता के सहयोग से, लोगों के जेब के पैसे से, लोगों के काम से राष्ट्र के निर्माण में पूरी मदद मिले और उससे राष्ट्र का नव-निर्माण हो, यही महान मांग राष्ट्र-

[पं० अलगू राय शास्त्री]

पति ने की है और उस मांग के सामने मैं यही कह सकता हूं कि सदन के सभी माननीय सदस्यों को दलीय भेद भुला कर जुट जाना चाहिये और राष्ट्र का नव-निर्माण करने में लग जाना चाहिये ।

राष्ट्रपति ने आर्थिक संकट के बारे में जिक्र किया और आर्थिक संकट के बारे में जो समस्यायें हैं उनका जिक्र किया । जैसे कि एक्सचेंज मिलने में दिक्कत है जो उसके लिये उन्होंने रास्ता बताया कि हम उपभोग की सामग्री, आमोद-प्रमोद की सामग्री, सैकड़ों साबुन, लिपस्टिक और इसी प्रकार की दूसरी आमोद-प्रमोद की चीजें न मंगायें, हमें जरूरी चीजें मंगानी हैं जैसे कि विदेशों से यंत्र मंगाये जा सकते हैं । मुझे याद है कि रूस के बारे में कहा जाता है कि रूस की जनता ने, रूस के लोगों ने अपने बाल बढ़ाये मगर बाहर से ब्लेड नहीं मंगाये । तो जब तक यह नियंत्रण यह आत्मसंयम हम अपने ऊपर नहीं लायेंगे जब तक अपनी बचत से मदद नहीं करेंगे, जब तक जिनके पास पैसा है वह सरकारी ऋण में उसको नहीं देंगे— उसके अतिरिक्त बाहर से भी सरकार मंगायेगी—तब तक यह योजना चरितार्थ नहीं हो सकती । मगर योजना को चरितार्थ होना है ।

"प्रारभ्यते न खलु विघ्न-भयान्न नीचै
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः
विघ्नैः पुनः पुनरपि ताड्यमाना
प्रारभ्यचोत्तम जना न परित्यजन्ति ।"

उत्तम जनों का काम है कि एक काम को शुरू किया तो उसको पूरी तकमील तक ले जाये और वह संकल्प राष्ट्रपति के भाषण में राष्ट्र के सामने आया है । उस संकल्प को हमें पूरा करना चाहिये ।

श्रीमन् इन चीजों पर प्रकाश डालने के बाद राष्ट्रपति ने विदेशों से अपने सम्बन्ध के बारे में कहा कि हमारे राज्य का सब के साथ प्रेम सम्बन्ध है ।

"अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।"

यह मेरा तेरा यहां नहीं । पृथ्वी मानवता मानव-मात्र की है । यह ग्लोब, यह देश मानव-मात्र का है । यह भूमि मानव-मात्र की भूमि है, सब की माता है ।

"न अस्माकं ज्येष्ठासः न कनिष्ठा सः
द्यौ : पिता अरितिर्माता ।"

मानव-मात्र के लिये यह भूमि मां है और यह द्यौ लोक पिता है । इस प्रकार के बन्धुत्व में विश्वास करने वाले हम इस बात को मानते हैं कि संसार मे हमारा द्रोही कोई नहीं, संसार में हमारा शत्र कोई नही । हम यह मानते है : "कबिरा खड़ा बाजार मे मांगे सब की खैर, ना काहू सों दोस्ती ना काहू सों बैर ।" हमारा न किसी से द्वेष है और न हम किसी के साथ बंधे है कि उन्हीं के साथ डूबेंगे । जहां आवश्यकता होती है वहां हमने आवाज़ उठाई है । नासिर साहब की एक तानाशाही हुकूमत के साथ हम गये । वहां अत्याचार देखा और आवाज़ उठा दी । उस आवाज़ का परिणाम यह हुआ कि ब्रिटेन का विदेश मंत्री (प्रधान मंत्री) चला गया, वह अपने पद से चला गया । अन्त में विजय हुई और आज ब्रिटेन उसी स्वेज कैनाल से जहाजरानी में लग गया है । वह समस्या हल हो गई है । आवाज सच्ची थी, शुद्ध हृदय से निकली थी और उस पर दुनिया ने ध्यान दिया । हमारी आवाज़ मे वह बल नहीं है, जो कि सैन्य बल के पीछे होता है, उसके पीछे सैन्य बल नहीं है लेकिन हमारी आवाज़ मे सत्य का बल है । इस तरह से इस नैतिक बुनियाद पर खड़े हो कर आज हमारे राष्ट्र के नायक ने, राष्ट्र के नेताओं ने जो ललकार दी है, वे जो बात कहते है वह दुनिया में सुनी जाती है । "सत्यमेव जयते नानृतम् ।"

मै इसके विस्तार में जाना आवश्यक नही समझता हूं, मगर मै इतना आपके सामने निवेदन करूंगा कि आज एक तरफ

मि० लारिस ने यह आवाज़ उठाई है कि हम जो आटमिक इनर्जी वीपन से यूरोप को गार्ड किये हुये हैं उसमें अगर रूस ने कुछ आक्रमण करने की कोशिश की तो हम विनाश करेंगे और दूसरे लोग इस किस्म की आवाज़ लगाते हैं, अमेरिका नेवाडा में ४६ नेशंस को इनवाइट करके बम के विस्फोट का प्रदर्शन दिखलाना चाहता है तो दूसरी तरफ ऐसे वातावरण में इस तरह की एक आवाज़ उठाना कि पंचशील को मानो, शान्तिपूर्वक अपने प्रश्नों को हल करो, एक बड़े भारी कंविक्शन की अपेक्षा रखता है, बड़े भारी आत्मबल की अपेक्षा रखता है और उसी आधार पर यह आवाज़ उठाई गई है। उस आवाज़ को संसार सुनेगा, नहीं सुनेगा तो विनाश को प्राप्त होगा। अंत में उसको इसी दिशा में आना ही पड़ेगा, जो दिशा कि दिखलाई गई है। तो इस प्रकार जो हमारी वैदेशिक नीति है वह विश्व के कल्याण के लिये बड़ा भारी वरदान सिद्ध हो रही है और मेरा विश्वास है कि विश्व उसी की ओर जायेगा।

श्रीमन्, इस भाषण में एक चीज़ की ओर बहुत ही ज़रा सा उल्लेख कर के छोड़ दिया गया है और वह चीज़ है काश्मीर का प्रश्न। काश्मीर के प्रश्न को यों ही छोड़ दिया गया, तो मुझे आश्चर्य सा मालूम हुआ कि जिस प्रश्न पर सब की निगाह लगी हुई है, उसको इतनी जल्दी समरली रिजक्ट कैसे कर दिया गया, उसका जरा सा विवरण दे कर के। शुरू में यह बात मुझे भी कुछ खटकी, लेकिन जब मैंने सोचा तो मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि काश्मीर की समस्या तो हमारी दृष्टि से हल हो चुकी है। हमारे राष्ट्रनायक ने, हमारे प्रधान मंत्री ने, पिछले दिनों जो वक्तव्य दिये हैं, उनमें उन्होंने कहा है कि बगदाद पैक्ट, सीएटो, नैटो, अमेरिका ने पाकिस्तान को जो मिलिटरी एड दी और जिस तरह से उनकी मीटिगों में, सीएटो की मीटिंगों में, काश्मीर के प्रश्न को ड्रैग किया गया इन बातों ने और ये सारी चीजें जिस तरह से हुई है, उन्होंने परिस्थितियों में आमूल परिवर्तन कर दिया है और इस आमूल परिवर्तन के बाद मतगणना के प्रश्न को या काश्मीर के सम्बन्ध में दूसरे प्रकार के प्रश्नों को सुलझाने की कोई बात उठती ही नहीं है। इस अभिभाषण में काश्मीर के सम्बन्ध में बहुत थोड़ा सा उल्लेख होना मुझे यही इम्प्रेशन देता है कि भारत सरकार इस चीज़ को मान चुकी है कि यह प्रश्न हल हो चुका है। मैं समझता हूं कि इस प्रश्न के हल में केवल एक ही बात बाकी रह गई है और वह है बीच में आ करके आक्रमणकारी आजाद काश्मीर का बैठ जाना। पाकिस्तान को चाहिये कि वह अपना दुराग्रह छोड़ कर के वहां से हट जाय। श्रीमन्, यह प्रश्न हल हो चुका है इस बात से भी सिद्ध होता है कि अभी "ईस्टर्न वर्ल्ड" में—जो कि एक मासिक पत्रिका है और जो कि लंदन में छपती है उसमें—जारिंग रिपोर्ट के सम्बन्ध में एक लेख निकला है, जिसको कि पी० टी० आई० ने यहां पर वितरित किया है और सभी समाचारपत्रों में प्रकाशित हुआ है, उसके शब्दों को अगर हम देखें तो हम पायेंगे कि काश्मीर के सम्बन्ध में भारत का जो केस था, भारत की जो मान्यता थी, उसमें उस पर पूरा प्रकाश डाला गया है और अब संसार को इस बात की जानकारी प्राप्त होगी कि आज तक काश्मीर के प्रश्न पर भारत के साथ अन्याय हुआ है। आपकी आज्ञा से मैं उसके उद्धरण को—जो कि अखबारों में निकला है — पढ़ देना चाहता हूं :

The "Eastern World", a monthly published from London, has said that in his report on Kashmir Mr. Jarring "has taken back to the Security Council the view that there is a great deal of reality in the Indian arguments". This recognition, the Magazine said, had come a little late, for "throughout the dispute India's attitude has too often been condemned as unreasonable and her arguments called invalid. But "it is nevertheless good to

[पं० अलगू राय शास्त्री]

know that matters will from now on be more in perspective". "Athough the Jarring Report contains a note of regret that India should have rejected arbitration to decide whether or not Pakistan is in default of earlier U.N. resolutions in keeping troops in Kashmir, the reasons why India stands firmly against such a suggestion are clearly implied and the reasons are valid," the "Eastern World", said. The journal considered that "the India Government have every right not to accept any move towards a solution that would assume Pakistan to have legal standing on Kashmir territory. By taking note of the concern expressed in Delhi in connection with the changing political, economic and strategic factors surrounding the whole of the Kashmir question together with the changing pattern of power relations in West and South Asia, Mr. Jarring has given credence to a factor in Indian relations with Pakistan that has not hitherto been taken sufficiently into account in discussions of the Kashmir issue. It is a factor which Britain, the U.S.A. and other western nations will not care to have aired at the forum of the U.N.

Strategic importance: "Pakistan's membership of SEATO and the Baghdad Pact and her acceptance of American military aid have hardened India's attitude. The position of non-involvement in which India and other South East Asian countries have placed themselves is jeopardised by the existence of SEATO, and it is not unnatural for India to consider the strategic importance of Kashmir." "The U.N. and the world ought now to come to recognize that Kashmir is not an issue that stands separately from the overall pattern of Indo-Pakistan relations. The improvement of those relations depends as much upon Western policies as upon the action of the two countries themselves.

The West is only too happy to have a non-progressive country like Pakistan as an ally in the region. It is only to be hoped that the situation does not become such as to give cause for alarm in India that that part of Kashmir under Indian control is threatened by Pakistan's strategic commitment to the West."

यह जो उद्धरण मैंने पढ़ा, इससे आज बादल साफ होते हैं, रोशनी आती है। भारत के साथ पश्चिमी देशों ने जो बिग पावर्स कहलाती हैं, काश्मीर के मामले में कितना अन्याय किया है। आक्रमणकारी पाकिस्तान को रोका नहीं गया, उनको मना नहीं किया गया, बैठ कर इस किस्म के तराने गाये जाने लगे कि जिससे समस्या उलझती ही है, सुलझती नहीं। आप देखिये, काश्मीर ने १९५१–५२ से जब से पंचवर्षीय योजना चालू हुई है, कितनी प्रगति की है, कितना उसका नव-निर्माण हुआ है, कैसे उसने अपने यहां शांति स्थापित की है, कैसे वह प्रगति के पथ पर अग्रसर है, अगर इन सब चीजों को देखा जाये तो क्या फिर कोई समस्या काश्मीर में रह जाती है। अगर काश्मीर जहां है, वहीं रहने दिया जाय तो विश्व में शांति बनाये रखने मे उससे लाभ उठाया जा सकता है। श्रीमन्, मैं आपकी आज्ञा हो तो सदन के सामने उन आंकड़ों को पढ़ दूं, जो काश्मीर की प्रगति के विषय में मैंने प्राप्त किये हैं। इससे मालूम होगा कि काश्मीर आज कहां है। काश्मीर अब पिछड़ा हुआ देश नहीं रहा वह इन वर्षों में, १९५१–५२ से लेकर १९५५–५६ के पंचवर्षीय योजना काल में कितना व्यय कर चुका है उसके आँकड़े मै बताता हूं। योजना मे केन्द्रीय और राजकीय शीर्षक के अन्तर्गत क्रमशः ९,३०६.५१ और ४२९.८१, कुल १,७३६.३२ रु० लगा। इसके द्वारा पूरे काश्मीर में नहरों, कुओं और विकास केन्द्रों का तांता लग गया है। पावर, सिंचाई, सड़क, गांव, नयी नयी जल व्यवस्था, यात्रा सुविधा, ग्रामोद्योग, अन्य उद्योग, खेती, पशुपालन, औषधि, फिशरी, भूमिरक्षण, शिक्षण, स्वास्थ्य, गृह व्यवस्था इन १४ शीर्षकों (हेडिंग) के नीचे इस राज्य

के विकास-कार्यों की व्यवस्था की गई । इन १४ शीर्षकों को मैं काश्मीर राज्य की प्रगति के चौदह रत्न समझता हूं । इन रत्नों को उसने इस मूल्य पर खरीदा है । क्रमशः अगर हम लें तो पावर में २७२.२७ लाख प्लान में स्वीकृत धनराशि है और सम्भावित धनराशि है २५२.६६ लाख । यह केन्द्र से प्लानिग कमीशन द्वारा दिया गया है । राज्य से पावर के शीर्षक के अन्दर स्वीकृत तथा सम्भावित धनराशि क्रमशः २२०.०७ और १७०.४८ लाख है । इसमें २२०.०७ लाख सिचाई के लिये है । यह तो प्लान में स्वीकृत राशि है और एक्चुअली जो व्यय होगा, वह १७०.४८ लाख है । जितना व्यय हो सकता है उससे ज्यादा का प्राविजन किया गया है । ३ शीर्षक के अन्दर २१५.८४ प्लान द्वारा स्वीकृत और २१८.४६ व्यय होगा । बाकी आंकड़े इस प्रकार हैं :—

शीर्षक संख्या	प्लान में स्वीकृत व्यय (लाख रुपये)	सम्भावित व्यय (लाख रुपये)
४	६८.५०	४४.६८
५	४७.०६	५३.६५
६	६३.७०	४६.८४
७	१६.७६	१३.६५
८	२४.३८	१६.६६
६	८.४८	६.४५
१० ११	६.६२	७.५४
१२	६६.०६	४६.७५
१३	४४.८३	३३.२१
१४	१३.३२	१७.५०

इन आंकड़ों से प्रतीत होगा कि सम्भावित खर्चे से ज्यादा प्लान में प्रोवाइड किया गया कि जिससे काश्मीर पिछड़ने न पाये । इस राज्य में जहां जहां आवश्यकता है, जहां जहां कमियां है, पिछड़ापन है, उसको दूर करने के लिये धन दिया गया है और इस तरह उसको आगे बढ़ाने की चेष्टा की गई है । यह इससे भी स्पष्ट होता है कि जो धनराशि स्वीकृत हुई है, उसके मुताबिक काश्मीर में योजनायें शुरू की जा चुकी हैं क्योंकि अगर वहां की विकास योजनाओं के विवरण को पढ़ें तो आपको मालूम होगा कि उन्होंने उन पर कार्य करना शुरू कर दिया है । पाकिस्तान में, जहां कि, नित नये मत्रि-मंडल बनते हैं, जो देश गृह-कलह में संलग्न है, वहां जा कर काश्मीर कैसे रह सकता है । अगर आज यूनाइटेड नेशन्स काश्मीर को आग में फेंकने के लिये तैयार हो जाय, तो यह मानवता के प्रति तो अन्याय होगा ही, न्याय के प्रति भी अन्याय होगा । क्या ये आंकड़े और ये उद्योग और विकास की योजनायें और कार्यक्रम काश्मीर की जनता के सामने नहीं हैं ? पाकिस्तान के शासक व्यर्थ में उम्मीद लगाये है कि काश्मीर उनके यहां जाने को तैयार हो जायगा । पाकिस्तान, जहां कि रहने को जगह नहीं है, खाने की जहां व्यवस्था नहीं है, जहां के फाइनेंस मिनिस्टर ने बजट पेश करते हुये स्वयं यह स्वीकार किया कि हमारी राष्ट्रीय आय गिर गई है, खाद्य संकट पैदा हो गया है, वहां कौन जाना पसंद करेगा । फिर, वहां दिन रात परिवर्तन होते रहते हैं, पाकिस्तान के नेतागण फिर भी दुराग्रह में लगे हुये हैं कि काश्मीर हमारे पास आ जाय । मैं बहुत सोचता हूं, आखिर उनका यह आग्रह क्यों है । सच बात यह है कि पाकिस्तान के दो भाग हैं—पूर्वी पाकिस्तान और पश्चिमी पाकिस्तान । पश्चिमी पाकिस्तान वाले करांची से पूर्वी पाकिस्तान के ढाके में उसी प्रकार से प्रभुत्व जमाना चाहते हैं जिस प्रकार लदन की गवर्नमेंट विदेशों में अपने राज्यों पर प्रभुत्व जमाये हुई थी ; लेकिन पूर्वी पाकिस्तान की जनसंख्या, उसका बिस्तार पश्चिमी पाकिस्तान के इरादों में बाधक हो गया । उन्होंने एक योजना बनाई—पश्चिम में विलोचिस्तान, फ़्रंटियर, पजाब, सिंध वगैरा को मिला कर एक यूनिट बना

[पं० अलगू राय शास्त्री]

दिया । एक यूनिट बन गया फिर भी, इसके बावजूद पश्चिमी पाकिस्तान का वह प्रभुत्व पूर्वी पाकिस्तान पर नहीं स्थापित हो पाता है । वह स्थापित हो पाता. अगर यह जनसंख्या और विस्तार का प्रश्न बीच में न आता । तब पाकिस्तान को और जगह से कोई टेरीटरी, कोई भाग या भूमि नहीं मिल सकती । न अफ़गानिस्तान आ सकता है, न भारत का कोई भाग अब उसको मिल सकता है । तो जनसंख्या और टेरीटरी के विस्तार के लिये अगर कोई जगह बाकी है तो निगाहेबद आज उधर ही पड़ी है, जो काश्मीर ह्वैली है, उसी को वह हड़प करना चाहता है । यह बात मेरी सूझ में, मेरी समझ में आती है । अब अगर अन्तर्राष्ट्रीय संगठन उनकी इस कुचाल से प्रभावित हो कर काश्मीर के प्रश्न पर दूसरी दृष्टि रखे तो इससे बढ़कर मानवता के लिये और न्याय के लिये अन्याय की दूसरी बात नहीं हो सकती है । इसलिये, श्रीमन्, मैं समझता हू काश्मीर का प्रश्न ईस्टर्न वर्ल्ड के लेख के अनुसार और स्वयं हमारे प्रधान मंत्री के कथनानुसार, जो स्थिति अब है और जिस तरह से काश्मीर ने अपनी समस्या को स्वयं सुलझा लिया है, उसको देखते हुये उसमें कोई परिवर्तन लाना खतरनाक होगा । इससे सुलझी हुई समस्या फिर से उलझ जायगी । इस विषय में और प्रकाश डालने की आवश्यकता अब नहीं रह गई है ।

श्री के० बि० लाल (बिहार) : असली बात यह है कि पाकिस्तान के साथ उलझन नहीं है, बल्कि अमेरिका के साथ है ।

पंडित अलगू राय शास्त्री : कुछ ऐसा ही लगता है । जैसा कि 'ईस्टर्न वर्ल्ड' ने कहा है, जिन लोगों का स्वार्थ निहित है, उन पावर्स को एक अविकसित सत्ता मिल गई है और उसको आगे करके वे विश्व की राजनीति में नया खेल खेलना चाहते है । यह बात सही हो सकती है लेकिन यहां मैं उसकी कल्पना में नहीं जाता हूं ।

श्रीमन्, कुछ लोगों का ख़याल है कि इस अभिभाषण में गोआ का जिक्र नहीं हुआ । कुछ मेरे साथियों का खयाल है कि बम्बई प्रान्त बनाने में जनता की इच्छा का खयाल नहीं किया गया । यही हाल गुजरात का है । यही सब आक्षेप उठाये गये है, ऐसे संशोधन भी आये हैं । मैं गोआ के बारे में इतना ही कह सकता हूं कि जेलखाने में चक्की में आटा पीसने का काम हमको मिलता था, उसमें हमें ऐसा करना पड़ता था कि आटा हम पीस लेते थे, फिर उसको चलाते थे, जो छानस रह जाती थी उसको भी हमें पीसना पडता था । यह बड़ा दुरूह कार्य होता है और इसमें बहुत रिपीटीशन होता है । तो बार बार गोआ का प्रश्न उठ चुका है और सभा के सामने अभी चंद दिन पहले बताया गया कि कोई नयी समस्या या उसका समाधान उसके सम्बन्ध में प्रतीत नहीं होता है । लेकिन अगर गोआ का प्रश्न इसमें नहीं आता है तो उसके माने यह नहीं है कि गोआ की तरफ से सरकार सो गई है । यह कल्पना तो मैं कर सकता हूं कि कदाचित् गोआ का प्रश्न सुलझ जायगा क्योंकि इस सम्बन्ध में तनाव मिटता जा रहा है और हमारी सरकार अपनी कूटनीति से कुछ न कुछ वार्तालाप, पत्र व्यवहार इधर उधर करती होगी । वैदेशिक विभाग से जो कार्य-कलाप चलते है और गतिविधियां की जाती हैं, उसके द्वारा इस समस्या को समझौते या समाधान द्वारा हल निकट आ गया है, ऐसा भी मैं सोचता हूं । हो सकता है, इस समस्या को महत्व इसलिये न दिया गया हो कि उस पीसे हुये आटे को बार बार पीसना अनावश्यक ही है । सालाजार सरकार का विचार सबको मालूम है और हमारी जो अपनी नीति है वह स्पष्ट है । इसलिये उसके अभिभाषण में न आने से यह भाषण कोई अधूरा नही रह जाता और

इससे कुछ बिगड़ नहीं जाता । बम्बई प्रान्त के सम्बन्ध में बड़े बड़े उद्गार प्रकट हुये, बड़ी बड़ी धमकियां दी गई कि सत्याग्रह किया जायेगा । जिन लोगों की तरफ से सत्याग्रह की धमकी आती है— सत्याग्रह कभी उनका अस्त्र नहीं रहा है—इसलिये वे उसको दुराग्रह की तरफ ले जाते हैं । जब इस तरह की चीज़ शुरू की जाती है तो वह व्यापक रूप में फैल जाती है, जिससे देश को हानि पहुंचती है । कई वर्षों से द्विभाषी राज्य की मांग हमारे नेताओं की थी और उन्होंने उसका उचित हल जनता के साथ मिलकर तय कर लिया है । अब इस बात को फिर से छेड़ना और एक आन्दोलन करने की धमकी देना उचित मालूम नहीं देता है ।

डा० आर० बी० गौड : यह बात तो उत्तर प्रदेश और बिहार के एम० पीज़० ने सुझाई थी, बम्बई के लोगों ने नही ।

पंडित अलगू राय शास्त्री : मैं यह निवेदन कर रहा था कि इस तरह की मांग करना एक संकुचित भावना की ओर ले जाता है । यह सदन है, सदन में अनेक प्रकार के लोग हैं, अनेक भाषा जानने वाले लोग हैं, अनेक प्रकार की भावनाओं के लोग है । जब आपस में सामंजस्य है, तब यह सदन कहलाता है । जिस प्रकार एक वाटिका होती है, उसमें अनेक प्रकार के फूल पत्तियां होती हैं, रंग विरंगे फूल और पौधे लगे होते हैं, कोई छोटा और कोई बड़ा पौधा होता है, फिर भी यह सब मिलकर एक वाटिका कहलाती है । उसी तरह से राष्ट्र के जीवन में कई भाषा बोलने वाले एक साथ रहते हैं और वह देश कहलाता है । एक देश तब ही विशाल बनता है, जब कि उसमें सब जाति के लोग ऊंच-नीच भावना का ख्याल न करते हुये आपस में सामंजस्य के साथ रहते हों । हमें भी सब विचार वाले आदमियों के साथ बैठकर रहना चाहिये । अगर हमने ऐसा किया तो हमारा देश एक विशाल देश कहलायेगा । संकुचित भावना रखने से तो किसी का भी उपकार नहीं होता है, इससे देश को ही हानि पहुंचती है । लन्दन दुनिया का एक बड़ा कास्मोपोलीटन शहर है और बम्बई ने भी अपना निर्माण इसी तरह से कर लिया है; वहां पर हर प्रान्त के लोग रहते हैं । मेरे पूर्वी जिले के लोग भी वहां शरीक हैं और उन्हें "भइया" कहा जाता है ।

(MR. DEPUTY CHAIRMAN in the Chair.)

इस तरह के नगर को एक भाषा-भाषी के रूप में बदलना न केवल वहां की जनता के अहित में होगा, बल्कि सारे देश के लिये अहितकर होगा । पूज्य राष्ट्रपिता महात्मा गांधी गुजराती थे ; परन्तु वह राष्ट्रपिता थे, केवल गुजरात के नहीं । आज वही गुजरात संकुचित गुजराती भावना रखे, तो यह एक अभिशाप ही हो सकता है, वरदान नहीं । इसलिये मैं समझता हूं कि इस तरह की मांग करना तो जनता की भावना को उभाड़ना है और उन्हें गुमराह करना है । बार बार इस तरह की मांग करके, संकुचित भावनाओं को उभाड़ कर जनता की उदारता की भावनाओं को समाप्त करना हुआ ।

डा० आर० बी० गौड : किस जनता की ? गुजरात की या महाराष्ट्र की या उत्तर प्रदेश की ?

पंडित अलगू राय शास्त्री : सारे देश की जनता — हमें देश की जनता की संकुचित भावना और पैरोकियालिज्म से ऊपर उठाना होगा । अगर हमने ऐसा नहीं किया तो यह किसी एक प्रान्त की हानि नहीं होगी बल्कि सारे देश की हानि होगी और इसका नतीजा यह होगा कि देश ने अभी तक जितनी उन्नति की है और कर रहा है, वह सब व्यर्थ चली जायेगी । इसलिये मैं यह निवेदन करना

[पं० अलगू राय शास्त्री]

चाहता हूं कि हमारी नीति शान्ति की नीति है । पंडित जवाहरलाल नेहरू एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिनके ऊपर संकुचित भावना और जातीयता का कोई असर नहीं पड़ता है । जवाहरलाल जी का गौर शरीर और शुभ्रवेश सफेद झंडा नहीं है वह गौरांग शंकर है—शंकर प्रलयंकर होता है, किन्तु नव-निर्माण के लिये अभी हाल में पंडित जवाहरलाल जी ने पटना मे एक वक्तव्य दिया था जिसमें उन्होंने कहा था कि जातीयता की भावना को उभाड़ना हानिकर है, उसका देश के ऊपर बहुत बुरा असर पड़ता है । उन्होंने एक सत्य बात का जिक्र किया जिसको अपनाने से देश का हित ही होगा । वे समझते है कि हमें अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होने के बजाय इस तरह की संकुचित भावनाओं से दूर रहना चाहिये । हम अपनी शक्ति का उपयोग निर्माण-कामों में लगाये, जिससे कि जनता का जीवनस्तर ऊंचा उठे । हमारा मार्ग शान्ति का है और इस माने में पंडित जवाहर लाल शान्ति के दूत हैं । उन का जो भी काम होता है, नव-निर्माण के लिये होता है, वे हमेशा एक कंस्ट्रक्टिव चीज़ के बारे में सोचते हैं । शस्त्र और अस्त्र की बात सोचना कोई कायरता नहीं है । पं० जवाहर लाल ने पटना के भाषण मे कहा था कि जिन राष्ट्रों के पास न्यूक्लीयर यन्त्र है उनके सामने वे राष्ट्र दुर्बल पड़ते हैं जिनके पास ये अस्त्र नहीं हैं । न्यूक्लीयर यंत्र चाहियें —

इन राष्ट्रों से—"शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्रचिन्ता प्रार्ते"—के वचन की सत्यता वह स्वीकार करते है ।

शस्त्र से रक्षित राष्ट्र मे ही शास्त्र चिन्ता हो सकता है । इस भावना मे सिद्धान्त की बात है और इसको हमें समझना चाहिये और इसे मानना चाहिये । यह कायरता की नीति नहीं है ।

इनके व एक बहुत बड़े और सर्वश्रेष्ठ नायक हैं, उन से वार्तालाप होने में यह बात सुनने को मिली कि हम जो शांति शांति, पीस, पीस की बात करते है तो संसार यह न समझे कि हम कमज़ोर है । हम शान्ति की बात कहकर शान्ति की नीति का विकास करते है । यह कायरता का प्रतीक नहीं है, यह तो शांति का संदेश देता है और पंचशील की भावना को फैलाता है । जब हम न्यूक्लियर टैस्ट के विरोध में बात कहते है तो इसी भावना को दृष्टि में रख कर करते हैं । श्रीमन्, एक शब्द कहकर मै समाप्त कर दूंगा । वह यह है कि आज समय की मांग है कि हम सब लोग एक राष्ट्र के रूप में, एक आवाज़ मे उठ खड़े हों । हम सब मिलकर इस देश का नव-निर्माण करें और दलगत भावनाओं को छोड़ कर आगे बढ़ें ।

"येनेन्द्रं समाभरः पयांस्युत्तयेन्न
ब्रह्मणा जातवेद ।
तेन त्वमग्ने इह वर्धयेनं सजातानां
श्रैष्ठ्यं आधेहि एनम् "

अर्थात्, जिन शक्तियों से सूर्य अथवा इन्द्र को भरा गया है, उन्हीं सद्गुणों, शक्तियों से हमारा राष्ट्र भर जाये जिससे विश्व में वह सर्वश्रेष्ठ हो । जिस तरह सूर्य के उदय होने से अंधकार छिप जाता है उसी प्रकार हम अपने सामूहिक प्रयत्नों से अपने देश की निर्धनता और अज्ञानता को मिटा दें । अगर हमने ऐसा किया तभी हमारा यह राष्ट्र विश्व के राष्ट्रों में सबसे श्रेष्ठ माना जायेगा । अगर हम सब लोग इस भावना का समर्थन करें और इसी दृष्टि से देखें और उससे प्रेरित हो कर एक साथ मिलकर काम करें तो इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारा राष्ट्र विश्व के राष्ट्रों में सर्वश्रेष्ठ हो सकता है । अगर हम साथ साथ हो कर चलेंगे, साथ साथ एक स्वर से बोलेंगे तो जो फल दुर्लभ है, वह भी हमें अपने प्रयत्नों

से प्राप्त हो जायेगा। इसी भावना के साथ मै इस अभिभाषण का स्वागत करता हूं ।

डा० राजेन्द्र प्रसाद जो हमारे राष्ट्र के राष्ट्रपति हैं उनके अभिभाषण के लिये मै उन्हें फिर अपनी हार्दिक वधाई प्रस्तुत करता हूं । मेरा विश्वास है कि यह सम्माननीय सदन, ऐसा प्रजातंत्रीय और वैधानिक व्यवस्था वाला सदन, जिसके समान शीर्षस्थ और कोई सदन नहीं है, एक स्वर से अभिभापण का स्वागत करेगा और अपने कर्त्तव्यों का पालन करेगा। मै आपका आभारी हूं कि आपने मुझे इतना समय दिया।

REQUEST FOR ENGLISH TRANSLATION OF PANDIT ALGU RAI SHASTRI'S SPEECH

DR. R. B. GOUR: Sir, before you call on the next speaker, I may submit that some of my comrades. who do not understand Hindustani, feel that a lot of important material has been given by Pandit Algu Rai Shastri. I therefore request that an English translation of his speech should be circulated to us tomorrow morning.

MOTION OF THANKS ON PRESIDENT'S ADDRESS—*continued*

DR. ANUP SINGH (Punjab): Mr. Deputy Chairman, I deem it a very great privilege to second the motion of thanks to the President for the Address that he delivered to both the Houses on May 13. I feel like also conveying my thanks to Mr. Shastri for so exhaustively covering the field that he has really lightened my task. However, I would like to utilise this opportunity by elaborating on some of the points that he has made and making a few observations more pertinent to the international field.

At the very outset. I would like to say, Sir, that looking at the list of amendments that have been presented here it appears that the movers of the amendments have as usual, missed the point as to what the President's Address is supposed to be. For instance there is a reference to the effect that the President's Address has not shown sufficient awareness of the near-famine conditions in India, that the President has failed to focus attention on the problem of Kashmir, that no reference has been made to Goa, and so on and so forth.

DR. R. B. GOUR: But all these are facts.

DR. ANUP SINGH: They are facts. Nobody denies them. They are very important but if every Presidential Address, every succeeding Presidential Address, were to make a reference, *even a casual reference, to all things* which are important both in the domestic field and in the international field, it would not be a Presidential Address; it would be a catalogue, an encyclopaedia. A Presidential Address, in my view, is supposed to sum up in a few words the paramount tasks that confront our people in the domestic field and in the international field. As for the details, certainly the Minister for Food will take care of the problem that confronts us. The Budget speech of the Finance Minister has taken *sufficient notice of the shortage* of foreign exchange, which has been mentioned in one of the amendments. Likewise, each and every point mentioned in the amendments will be taken care of and dealt with by the various Ministries. I submit, therefore, that the Presidential Address is not called upon to catalogue these things, report upon them and to suggest solutions. There is one small paragraph in the Address, and for the benefit of those who have missed the point, I would like to read it out:

> "That tasks that confront us both at home and abroad are not only considerable but at times appear overwhelming. But these tasks have to be faced, difficulties surmounted and objectives achieved if the fruits of independence are to be ensured to our people and if we are to help the world being spared the continual stress and horror of impending catastrophe."